सृजन विमर्श

डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैया'

"डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंया हिन्दी के सुधी समीक्षक, और गंभीर साहित्यिक अभिरुचि से सम्पन्न एक मनस्वी व्यक्ति है। आशय यह कि ये समग्र जीवन को साहित्य की आंख से देखते हैं। यह बहुत ही स्वस्थ और प्रीतिकर जीवन-दर्शन है। इसमें होता है औदार्य, तुच्छताओं की उपेक्षा, गुणग्राहिता, रस ग्राहिता और रसवितरण, उदात्तता, हृदय की विशालता, सबके प्रति समभाव, स्वाभिमान, औरों के प्रति आदर, विनय आदि। संक्षेप में यह कि, मनुष्यता को प्रोज्ज्वल बनाने वाले समस्त उज्ज्वल गुणों का समाहार। डॉ. बरसैंया में सज्जनोचित बहुसंख्यक गुण हैं जो उन्हें जानने वाले प्रत्येक व्यक्ति को उनके निकट ला देते हैं।"

—डॉ. कृष्णचन्द्र वर्मा, ग्वालियर

डॉ. बरसैंया के निबंध संग्रहों में जहां हास्य-व्यंग्य और वक्रता विधान की झलक पदे-पदे मिलती है, वहीं निबंधकार की भावुकता, संवेदनशीलता के साथ ही बौद्धिक प्रगल्भता और चिन्तन की गहराई की भी अभिव्यक्ति सर्वथा श्लाघ्य है। वस्तुतः निबंधों में आत्मपरकता के साथ प्रतिपाद्य विषय के सूत्रों की अचूक पकड़ और विषय विशेष के तर्क संगत विश्लेषण विवेचन की क्षमता उन्हें गुरुता प्रदान करती है।"

—डॉ. किशोरीलाल, इलाहाबाद

डॉ. बरसैंया को सामान्यतया मध्यकालीन काव्य के शोधक, समीक्षक और पाठानुसंधानी के रूप में जाना जाता है, पर 'अरमान वर पाने का', 'निन्दक नियरे राखिये' और 'अथ काटना कुत्ते का भइया जी को' शीर्षक व्यंग्य संकलनों से व्यंगकार के रूप में वे अब गुप्त नहीं रह गये हैं। उनके पास व्यंग्य को पकड़ने की, उसे समझने की, उसे विश्लेषित करने की जैसी साफ सुथरी दृष्टि है वैसी ही संप्रेषक, निर्भ्रान्त और धारदार भाषा भी।.... हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, ज्ञान चतुर्वेदी, जीवनलाल वर्मा विद्रोही जैसे नामों के साथ डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त का नाम भी हिंदी व्यंग्यकारों की सूची में प्रतिष्ठित है।

—डॉ. कांतिकुमार जैन, सागर

ISBN : 81-8160-063-0

मूल्य : 500.00 रुपये

सृजन-विमर्श

डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

ISBN : 81-8160-063-0

© डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

संस्करण : 2008

प्रकाशक :

सार्थक प्रकाशन

100ए, गौतम नगर,
नई दिल्ली-110 049
दूरभाष : 26 56 73 17

लेज़र कम्पोजिंग :
अंकित कम्प्यूटर्स
दिल्ली-110 094

मुद्रक :
बालाजी ऑफसेट,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

मूल्य : पाँच सौ रुपए

Srajan-Vimarsh
by : Dr. Gangaprasad Gupt 'Barsaiyan'

Price : 500.00

अपनी बात

संतों ने प्रायः जीवन के अंतिम चरण में अपना आकलन करते हुये यही पश्चाताप व्यक्त किया है कि मैंने अपना जनम अकारथ खो दिया। जो करना चाहिये था, वह न करके इस संसार के मायावी जाल में भटकता रहा लेकिन स्थिति वही बनती है कि 'अब पछताये होत का जब चिड़िया चुग गईं खेत।' भीतर से पीड़ा के स्वर उभरते हैं कि जीवन का अधिकांश सोने-खाने भटकने में व्यतीत कर दिया। बुढ़ापे के पूर्व ही जिन संतों को चेतना आ गई उन्होंने अलग तरह से दुख व्यक्त किया—'अब लौं नसानी, अब न नसैहों।' तीसरे प्रकार के लोग हैं जो जीवन के अंतिम श्वांस तक संघर्ष के लिये डटे रहने का दावा करते हैं। मैं न तो संत हूं और न पश्चाताप करने जैसी मेरी स्थिति है। मैंने जो भी किया पूरी ईमानदारी निष्ठा और शक्ति से किया, चाहे वह जीवन जीने की बात हो या लेखन की। किन्तु एक बात तो निर्विवाद है कि बुढ़ापा सभी को आता है और सचेत करता है बिखरे कार्य को समेटने तथा अधूरे को पूरा करने के लिए। 'श्रवण समीप भये सित केशा' जैसे लक्षण बुढ़ापे के आगमन के संकेतक होते हैं। मेरे केश श्रवण के समीप ही नहीं, अपितु पूरे सिर पर काँस की तरह सफेद हो रहे हैं। मानों संकेत की बजाय ढोल पीट कर कह रहे हैं कि सावधान बुढ़ापा डंके की चोट पर आ रहा है।

मैंने भी जीवन के 71 वर्ष पूरे कर 72वें वर्ष में प्रवेश किया है। भीतर से एक स्वर बार-बार सुनाई पड़ता है—'जो करना है जल्द कर' अथवा 'काल्ह करै सौ आज कर'। यह स्वर हताशा या निराशा का नहीं, चेतावनी और चेतना का है। काम का कभी अंत नहीं होता। चाहे जितना समेटो बढ़ता जाता है। एक पूरा हुआ नहीं कि दूसरा सामने आ खड़ा होता है। मैंने भी अपने तमाम पुराने बिखरे हुए पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों को समेटने का उपक्रम किया है। फलतः आलेखों के दो संग्रह तैयार हो गये—एक समीक्षात्मक आलेखों का और दूसरा परिचयात्मक, चिन्तनपरक और व्यंगपरक लेखों का। **'सृजन-विमर्श'** नाम का यह संग्रह साहित्य-जगत को सौंपते हुए मुझे संतोष का अनुभव हो रहा है कि बिखरी सामग्री ग्रंथ के रूप में अधिकारी पात्रों के हाथों पहुंच रही है।

इस संग्रह के तीन भाग हैं। पहले भाग में साहित्यकारों से संबंधित आलेख

हैं जो उनकी साहित्य सेवा और रचना वैशिष्ट्य की पहचान कराते हैं। ये ऐसे साहित्य सेवी हैं जिन्होंने अपना सारा जीवन साहित्य-साधना में लगा दिया। इनमें स्वामी प्राणनाथ, रहीम, छत्रसाल, ठाकुरदास कायस्थ, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, गौरी शंकर द्विवेदी, घासीराम व्यास, दीवान प्रतिपाल सिंह, घनश्यामदास नीगरैया आदि से संबंधित ऐसे कई शोधपूर्ण तथ्य दिए गए हैं जो बहुतों के लिए सर्वथा नवीन हैं। इसमें रहीम द्वारा फारसी में तैयार कराई गई रामायण के दो पृष्ठ तथा रामचन्द्रिका की फारसी की प्राचीन प्रति के भी दो पृष्ठ दिए गए हैं। दूसरे भाग में साहित्य-कला और जीवन के अन्य क्षेत्रों से संबंधित गंभीर आलेख हैं जो मैं समय-समय पर लिखता रहा हूं। और तीसरे खंड में कुछ व्यंग लेख हैं। मैंने अनुभव किया कि बहुत-सी ऐसी बातें जो हम अन्य विधाओं में नहीं कह सकते, उन्हें व्यंगात्मक रचनाओं में बखूबी प्रगट कर सकते हैं। व्यंग लिखते समय एक अलग प्रकार के साहसी पैनेपन की अनुभूति होती है, साथ ही संतोष भी। इन व्यंग लेखों में जीवन और साहित्य के विविध पक्षों, विसंगतियों को लक्ष्य बनाया गया है। इनमें मनोरंजन का पुट भी है और प्रहार भी।

मैंने अनुभव किया कि साहित्य और कला से जुड़ा व्यक्ति न तो बूढ़ा होता है और न भयभीत। न वह थकता है और न ऊबता है। निरन्तर नई ऊर्जा का अनुभव करता हुआ तरोताजा बना रहता है जिसे यांत्रिक क्षेत्र में 'रिचार्ज' होना कहते हैं। साहित्यकार की सोच और संवेदना का क्षेत्र व्यापक होता है। वह अपनी सीमा में बंधकर या बंद होकर रहने की बजाय खुले वातावरण में विचरण करता है। सबका बनकर ऐसी बात लिखता है जो सबकी बन जाती है। उस सबमें वह स्वयं शामिल होकर सार्थकता का अनुभव करता है।

मुझे लिखते हुये 50 वर्ष से अधिक हो गये। आश्चर्य होता है कि इतने वर्षों में इतना सब कैसे लिख गया। हर दिन नया, और हर रचना नवीन लगती है। नवीनता की यही अनुभूति संजीवनी शक्ति का काम करती है। आकांक्षा यही है कि अंतिम सांस तक यह संजीवनी साथ रहे। इसी कामना और भावना के साथ मैं अपने आलेखों का एक और संग्रह साहित्य-साधकों साहित्य-प्रेमियों के हाथों सौंपते हुए आनंद का अनुभव कर रहा हूं। विश्वास है कि सभी की शुभकामनायें और प्रेरणायें पूर्ववत् मिलती रहेंगी।

–डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंया

चैत्र नवरात्रि, संवत् 2065
12-एम.आई.जी. चौबे कॉलोनी
छतरपुर (म.प्र.)-471001
मोबाइल : 9425376413, फोन : 07682-241024

अनुक्रम

भाग-1

अनामपंथ के संस्थापक गुरु अफजल साहब	11
भारतीय चेतना के ध्वजवाहक स्वामी प्राणनाथ	19
सौभाग्य और दुर्भाग्य के धनी रहीम और रामकथा	35
मीरा का विद्रोही संकल्प	51
शास्त्र और शौर्य के धनी कवि छत्रसाल	55
कवि-काव्य प्रेमी छत्रसाल	61
राष्ट्रप्रेमी छत्रसाल और उनके कुछ पत्र	64
भूषण और छत्रसाल	74
शिवराज भूषण के प्रकाशन की कहानी	83
रीतिकालीन अज्ञात कवि चैनराय	86
रेवाराम का वयः संधि वैशिष्ट्य	89
बुन्देलखंडी कवि ठाकुर (ठाकुरदास कायस्थ) और उनका काव्य	92
कवि ठाकुरदास कायस्थ के छंदों में प्रयुक्त कहावतें और शब्दावली	103
ईसुरी की कहानी : फागों की जुबानी	108
सबल साहित्यकार उदय शंकर भट्ट	112
मनस्वी साहित्यकार पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी	117
बुन्देलखंड के साहित्यकोश पं. गौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर'	127
साहित्य-जगत् की अज्ञात प्रतिभा : अमानसिंह गोटिया (तालुकेदार)	133
युग मनीषी पं. माखनलाल चतुर्वेदी	138
तपस्वी साहित्यकार रामानुजलाल श्रीवास्तव	143
बहुमुखी रचनाकार अम्बिकाप्रसाद दिव्य	149
क्रांतिकारी रचनाकार घासीराम व्यास	154
'बुन्देलखंड का इतिहास' के लेखक दीवान प्रतिपाल सिंह	163
बाबू गुलाबराय के साथ कुछ क्षण	168
सर्वेश्वर के काव्य में प्रतीक-योजना	172
सामाजिक सरोकार के कवि केदारनाथ अग्रवाल	180

विद्वता और विनय की प्रतिमूर्ति डॉ. भगीरथ मिश्र	189
घनश्याम दास नौगरैया (कक्का कवि जबलपुरी)	192
कबीरपथी स्व. प्रमोद वर्मा	198
स्मृतिशेष संतोषसिंह बुन्देला	205
गीतकार श्री रामस्वरूप सिन्दूर	212

भाग-2

दुराग्रह साहित्य का धर्म नहीं	219
साहित्य में बढ़ता प्रदूषण	225
वर्तमान साहित्य : स्थितियां और मानसिकता	231
साहित्य-संस्कृति और हिन्दी के साथ खिलवाड़ क्यों?	234
गीत-नवगीत के प्रारंभिक संदर्भ	239
नवगीतों में समय-स्वर	245
समय के साथ यात्रा करती बुन्देली की अभिव्यंजना-शक्ति	251
साधकों की दृष्टि में भाषा	267
मर्यादाओं को चीरकर झाँकता यथार्थ	271
मानस का उपेक्षित पात्र महाबली बालि	277
लोकभूमि साहित्य की जन्म-भूमि है	283
मुक्तिबोध स्मारक त्रिवेणी संग्रहालय : एक अनूठी कल्पना	286
खजुराहो : शिल्पकला वैभव का जीवंत संसार	290
पाठक-पुस्तक-प्रकाशक : एक असंतुलित त्रिकोण	294
हमें भावुक नहीं, व्यावहारिक होना चाहिए	299

भाग-3

साहित्य सर्विस सेन्टर	305
ऊधो मन न भये दस बीस	313
कनवरटाइगो	318
देख पराई चूपरी	323
पर उपदेश कुशल बहुतेरे	327
कविन के मामले में करै जौन खामी	332

डॉ. गंगा प्रसाद गुप्त 'बरसैंया''

जन्म : 6 फरवरी 1937
शिक्षा : एम.ए., पी-एच.डी.
सेवा : म.प्र. के शासकीय महाविद्यालयों में व्याख्याता, प्राध्यापक, प्राचार्य, स्नातकोत्तर प्राचार्य पद से 31-12-96 को सेवानिवृत्त।
निवास : एम.आई.जी.-12, चौबे कॉलोनी, छतरपुर (म.प्र.)। फोन : 07682-241024

पुस्तकें : (1) हिन्दी साहित्य में निबन्ध और निबन्धकार (शोध प्रबन्ध) (2) हिन्दी के प्रमुख एकांकी और एकांकीकार (3) छत्तीसगढ़ का साहित्य और उसके साहित्यकार (4) आधुनिक काव्य : संदर्भ और प्रकृति, (5) रस विलास, (6) वीर विलास, (7) सुदामा चरित, (8) चिन्तन-अनुचिन्तन, (9) बुन्देलखण्ड के अज्ञात रचनाकार (शोधग्रंथ) (10) अरमान वर पाने का (व्यंग्य), (13) तुलसी के तेवर, (14) कर्म और आराधना, (15) रचना से रचना तक, (16) सृजन-विमर्श, (17) समवाय, (18) नारी : एक अध्ययन (19) मेरी जन्मभूमि : मेरा गाँव, (20) कभी-कभी यह भी (काव्य संग्रह), (21) निन्दक नियरे राखिये, (22) अथ काटना कुत्ते का भइया जी को, (23) शब्दों के रंग : बदलते प्रसंग, (24) लोक वाटिका, (25) रूपक और साक्षात्कार आदि।

सम्मान-पुरस्कार : (1) महामहिम उप राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल जी शर्मा द्वारा साहित्य श्री। (2) अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन द्वारा ''साहित्य श्री'' तथा भारत भाषा भूषण से सम्मानित (3) नागरी प्रचारणी सभा, कानपुर द्वारा—'साहित्य भारती', (4) तुलसी सम्मान व विद्रोही पुरस्कार, (5) ओरछा महोत्सव व केशव जयंती समारोह समिति द्वारा ''मित्र मिश्र अलंकरण'' एवं पुरस्कार (6) लोक मंगल एवं लोक संस्कृति सेवा निधि ट्रस्ट उरई (उ.प्र.) द्वारा 'गौरी शंकर द्विवेदी शंकर' अलंकरण एवं पुरस्कार, (7) अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित।

संस्थाओं से सम्बद्ध : (1) अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा के कला संकाय के पूर्व डीन, हिन्दी बोर्ड के अध्यक्ष व कार्य परिषद के सदस्य (2) पूर्व डायरेक्टर, महाकवि केशव अनुसन्धान केन्द्र, ओरछा, म.प्र. (3) म.प्र. आंचलिक साहित्यकार परिषद के उपाध्यक्ष (4) बुन्देलखण्ड कला संस्कृति परिषद, छतरपुर के अध्यक्ष (5) अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन, छतरपुर के अध्यक्ष आदि।

सार्थक प्रकाशन
100ए. गौतमनगर. नईदिल्ली-110 049

ISBN 81-8160-063-0
9788181600639

Price: Rs. 500/-